

रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा

रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा,
राम नाम नहीं गायेगा तो अंत समय पछतायेगा,
रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा,
राजा राम राम राम राजा राम राम राम राजा राम राम,

जिस जग में तू आया है यहाँ इक मुसाफिर खाना है,
रात में रुक कर सुबह सफर कर यही से चले जाना है,
लेकिन येह भी याद रहे सांसो का पास खजाना है,
रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा,

मन की वासना शूद्र जैसी भुधि नहीं निर्मल की है,
झूठी दुनिया दारी से क्या आस मोक्श के फल की है
रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा,

पोंछ गुरु के पास ज्ञान की दीपक का उजाला ले,
कंठी पहन कंठ में जप की सुमिरन की तू माला रे,
रे मन मुख कब तक जग में जीवन व्यर्थ बिताये गा,

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12607/title/re-mn-murkh-kab-tk-jag-me-jeewan-vyarth-bithaayega>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |